सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान गोपीवल्लभ की सच्ची गोपी हूँ।

- शास्त्रों में प्रसिद्ध है कि मुरली की तान सुनकर गोप-गोपिकाएं अपनी सुध-बुध भूल जाया करते थे... और अपने सब काम छोड़कर मुरलीधर की मुरली सुनने पहुंच जाया करते थे... वे मुरली की धुन में अपने देह का भान भूलकर अतिन्द्रिय सुख के झूले में झूलने लगते थे... रास करने लगते थे... शास्त्रों में वर्णित वे गोप-गोपिकाएं और कोई नहीं, बल्कि हम ही हैं...।

योगाभ्यास - भक्ति में वे भक्त बड़े महान माने जाते हैं, जिनके कानों में सदा 'अनहदनाद' गूंजता रहता है.. हमारे कानों में भी मुरलीधर के मधुर मुरली की धुन गूंजती रहे... अर्थात् परमात्म महावाक्य का सिमरण करते हुए हम गोप-गोपियां सारे दिन अतिन्द्रिय आनंद में झूमते रहें...।

- मैं गॉडली स्टूडेंट हूँ... स्वयं भगवान मुझे पढ़ाने के लिए परमधाम से आते हैं... मैं कितना ना भाग्यशाली हूँ जिसका शिक्षक स्वयं भगवान है... वाह रे मैं वाह मेरा भाग्य... इसी नशे में मुरली सुनें और सारे दिन इस नशे को कायम रखें।

- मुरली से पूर्व बड़े प्रेम से मुरलीधर बाबा का आह्वान करें... उनको ही सामने देखते हुए मुरली सुनें... और मुरली के पश्चात् उनका तहे दिल से शुक्रिया अदा करते हुए विदाई दें...।

धारणा - रोज मुरली सुनना वा पढ़ना

- जो भी मुरली मिस करते हैं वह समझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथाशक्ति बनेंगे। इसलिए मुरली, मुरली, मुरली। क्योंकि मुरली में रोज के डायरेक्शन होते हैं, चारों ही सबजेक्ट के डायरेक्शन होते हैं, तो रोज के डायरेक्शन लेने हैं ना? तो जो भी मिस करता हो, कारणे-अकारणे वह अपना प्रोग्राम बनावे कि कैसे मुरली सुनें।

चिंतन - मुरली का महत्व और सुनने से 108 फायदे लिखें।

- मुरली को खुद के लिए सरस/मनोरंजक कैसे बनायें? मुरली का पूरा-पूरा लाभ कैसे उठायें?

- सेवाकेंद्र में मुरली सुनने और व्यक्तिगत रूप से मुरली पढ़ने में क्या अंतर है? दोनों में अच्छा कौन है?

- रोज की मुरली से होमवर्क कैसे निकालें और उसे प्रैक्टिकल में कैसे लायें?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! प्यारे बाबा ने कहा है - अगर रोज की मुरली जो बाप ने कहा और बच्चों ने किया तो उसको कहा जाता है बाप के सिकीलधे बच्चे, आज्ञाकारी बच्चे। रोज की मुरली उसमें चारों ही सब्जेक्ट का होमवर्क है। मंसा का भी है, वाणी का भी है, कर्म का भी अटेंशन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी। तो आयें अब ब्रह्मा बाबा समान मुरली के महत्व देते हुए मुरलीधर की सभी शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करें।

द्वितीय सप्ताह

स्वमान - मैं ब्रह्मा बाप समान एवररेडी हूँ।

- अपने को सदैव ऐसा एवररेडी रखना है जो कभी भी अंत का समय आ जाए तो इंतजार को खत्म करके इंतजाम रखना। सिर्फ सर्विस में एवररेडी नहीं लेकिन पुरुषार्थ में भी एवररेडी, संस्कारों को समाप्त करने में भी एवररेडी बनना है। इसके लिए संकल्पों को एक सेकण्ड में बंद करना है। तब कहेंगे एवररेडी।

योगाभ्यास - अभी ऑर्डर हो कि दृष्टि को एक सेकण्ड में रूहानी व दिव्य बनाओ जिसमें देह अभिमान का जरा भी अंशमात्र न हो, तो ऐसा बनने में एक सेकण्ड के बजाय दो सेकण्ड भी न लगे, तब कहेंगे एवररेडी।

- हर कर्मेन्द्रिय को जब चाहें, जहां चाहें वहां लगा लें और जब न लगाना हो तो कंट्रोल कर लें। अपनी बुद्धि को जहां चाहें जितना समय चाहें, उतना समय उस स्थिति में स्थित कर लें, तब कहेंगे एवररेडी।

- एवररेडी आत्मायें साकारी दुनिया और साकारी शरीर में होते हुए भी बुद्धियोग की शक्ति द्वारा अनुभव करेंगी कि मैं आत्मा सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में बाप के साथ रहती हूँ। अभी-अभी यहां और अभी-अभी वहां। साकारी वतन से निकल मूलवतन के कमरे में चली जायेंगी।

धारणा - एवररेडी

- जो सोचो उसे उसी समय करो - इसको कहा जाता है एवररेडी। मंसा से भी एवररेडी, संस्कार परिवर्तन में भी एवररेडी। रूहानी संबंध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी।

- जब आप स्वयं को सर्व तरफ से समेट कर एवररेडी बनायेंगे तो विनाश भी रेडी हो जायेगा।

- एवररेडी अर्थात् सदा अंतिम समय के लिए अपने को सर्वगुण सम्पन्न बनाने वाले।

स्वचिंतन - क्या मैं स्वयं को एवररेडी समझता हूँ?

- एवररेडी बनने के लिए मुझे क्या करना होगा?

- एवररेडी आत्मा की निशानी क्या होगी?

साधकों प्रति - प्रिय साधकों! बापदादा ने कहा है कि मुक्ति-जीवनमुक्ति का गेट खोलने की जवाबदारी बाप के साथ-साथ आप एवररेडी आत्माओं की है। यह विनाश सर्व आत्माओं की सर्व कामनायें पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। इसलिए अब ऐसा संकल्प इमर्ज करो कि सर्व आत्माओं का कल्याण हो। सभी सुखी और शांत हो अब घर चलें। इस संकल्प और स्मृति से विनाश ज्वाला भड़केगी और सर्व का कल्याण होगा। इसलिए अब बेहद की उपराम वृत्ति व वैराग्य वृत्ति को धारण करने में एवररेडी बनो।

वह दिन कभी... पृष्ठ 2 का शेष

दादीजी के पास जाने में किसी को कभी भी हिचक महसूस नहीं होती थी। एक बार मैं दादीजी से मिलने गया क्योंकि उसी समय मुझे उनसे मिलकर बाहर जाना था। जैसे ही उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ी तो उन्होंने मुझे अंदर बुला लिया और हाल-समाचार पूछकर मुझे कार्य की प्रेरणा दी और सैलवेशन देकर अग्रसर कर दिया। इतनी बड़ी दादी और इतना सरल हृदय, यह मेरे जीवन का सबसे अनोखा अनुभव था।

दादीजी का क्लास के बाद पाण्डव भवन में बैठना और सबको वरदानी, स्नेही दृष्टि से पूचकारना, उनका यह सरल व्यक्तित्व सबके दिल में अमिट जगह बना लेता था। दादीजी के विशाल हृदय का तो पूछना ही क्या, चाहे जितने भी लोग आ जायें दादी सबको मिलती थी और सबसे हाल समाचार लेती थी। आप मधुबन में आये और दादी न मिले ऐसा कभी नहीं हुआ। दादीजी के जीवन में असंभव नाम का शब्द कभी दिखाई नहीं दिया। जो संकल्प आया वह पूर्ण होता गया। सन् 1987 में कुमारों की भट्ठी 'ओम शांति भवन' में थी। उस समय बरसात का मौसम था और बारिश भी अच्छी हो रही थी। करीब 1500 कुमार थे उस तपस्या भट्ठी में। दादीजी ने सत्यता की शक्ति के ऊपर साढ़े तीन घण्टे क्लास करवाया। तब मुझे यह अनुभव हुआ कि सत्यता की शक्ति का हमारे जीवन में कितना महत्व है। छोटी-मोटी भूल से हमारे जीवन में कितना नुकशान होता है इस पर प्रकाश डाला। उनके कहने का ढंग, उनके दिल का निश्छल स्नेह ने सबको सत्यता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा व शक्ति दी। आज भी वह दिन मैं भूल नहीं पाता हूँ। अगर दादीजी के बारे में यूं कहें कि भगवान ने फुरसत के पल में दादी को बनाया है, तो गलत न होगा। क्योंकि दादीजी हर दिव्यता, हर शक्ति की दिव्यमूर्त थीं और भगवान को भी उन पर नाज था। सचमुच जीवन हो तो ऐसा हो....।

जिनकी दिव्य... पृष्ठ 1 का शेष

प्रकाशमणि के लिए। क्यों उन्हें भगवान इतना प्यार करता था जो अव्यक्त होते समय बाबा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी समस्त शक्तियां दे दी थीं। क्योंकि वे निर्मल थीं, वे अनासक्त थीं, वे त्यागी व परोपकारी थीं।उनका चित्त सभी के लिए शुभ-भावनाओं से भरा था, वे निर्विकारी थीं। उन्होंने भगवान द्वारा रचित रूद्र यज्ञ को सफल बनाया था, उसमें आने वाले विघ्नों कोसमाप्त किया था। सचमुच वे यज्ञ रक्षक थीं।

वे चाहती थी कि प्रत्येक यज्ञ-वत्स संतुष्ट रहे, योगी बनकर रहे, व्यर्थ से मुक्त रहे। सब एक-दूसरे को सुख देते रहे, संतुष्ट करते रहे। सब यज्ञ सेवा से अपना भाग्य चमकाते रहे। हम यज्ञ-वत्स उनकी इन शुभ-कामनाओं को पूर्ण करके उनकी श्रेष्ठ पालना का रिटर्न देंगे।

हे विश्व की आधारमूर्त, आपको कोटि-कोटि नमन्! हे जहान के नूर, 25 अगस्त के दिन आपको बारम्बार नमन्। हे असंख्य आत्माओं के दिल के दीपक आपको शत् शत् नम्। सारा विश्व आपका ऋणी है। स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा व स्वयं निराकार परम सद्गुरु आपके ऋणी हैं। हम इस पुण्य स्मृति पर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं और आप समान सच्चाई व निरहंकारिता को धारण करते हुए आपके स्वप्नों को साकार करने का संकल्प करते हैं।

दिल्ली, परमपुरी। निगम पार्षद शिवाली शर्मा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.शक्ति एवं ब्र.कु.सुदेश।

सुरत, अडाजन। रोटरी क्लब में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.दक्षा, रोटरी क्लब के अध्यक्ष तापीवाला तथा अन्य।

अलकापुरी, बड़ौदा। 'आध्यात्मिकता एवं राजयोग' विषय पर प्रशिक्षण लेने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं आर.पी.जी.केबल्स के सदस्य, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, ब्र.कु.नरेन्द्र एवं भगिनी प्रीति उपाध्याय।

भवात, चण्डीगढ़। श्री स्वामी रामतीर्थ जी महाराज वेदांताचार्य से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.हरविंद्र।

सोनपेठ, सोलापूर। ब्र.कु.मीरा को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए राष्ट्र संत 108 डॉ.शिवलिंग शिवाचार्य महाराज।

बीना। फिल्म अभिनेता राजपाल यादव को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.जानकी तथा अन्य।